
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th HISTORY
ई- पाठशाला
यात्रियों के नजरिए
समाज के बारे में उनकी धारणाएँ
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
28 सितंबर 2026 || 03:30 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER







RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

देश	अलबरूनी Uz	इब्नबतूता मोरक्को	फ्रांस्वा बर्नियर फ्रांस
समय	11	14	17
शासक	गज़नी	मुहम्मद तुगलक	शाहजहाँ
किताब	किताब उल हिन्द	रिहला	TRAVELS IN MUGHAL EMPIRE

mg



अल – बिरुनी तथा किताब-उल-हिन्द

- अल-बिरुनी का जन्म- 973 ई. में उज़्बेकिस्तान में स्थित ख्वारिज्म में (शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र)
- भाषाओं का ज्ञान – सीरियाई, फ़ारसी, हिब्रू तथा संस्कृत
- एवं अन्य यूनानी दार्शनिकों के कार्यों से भी परिचित।
- 1017 ई. में सुल्तान महमूद गजनवी का ख्वारिज्म पर आक्रमण हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कई विद्वानों के साथ गजनी गया और जीवन के अंतिम वर्ष वहीं बिताए।
- पंजाब के गजनवी साम्राज्य में आने से स्थानीय संपर्क बढ़ा।
- अल-बिरुनी ने संस्कृत, धर्म व दर्शन का अध्ययन किया।
- उसने पंजाब व उत्तर भारत की यात्राएँ कीं।
- अल-बिरुनी सहारा रेगिस्तान से वोल्गा नदी तक के क्षेत्रों से परिचित था।
- वोल्गा यूरोप की सबसे लंबी नदी है, जो कैस्पियन सागर में गिरती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. जीवन परिचय ?

Q अलबरूनी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

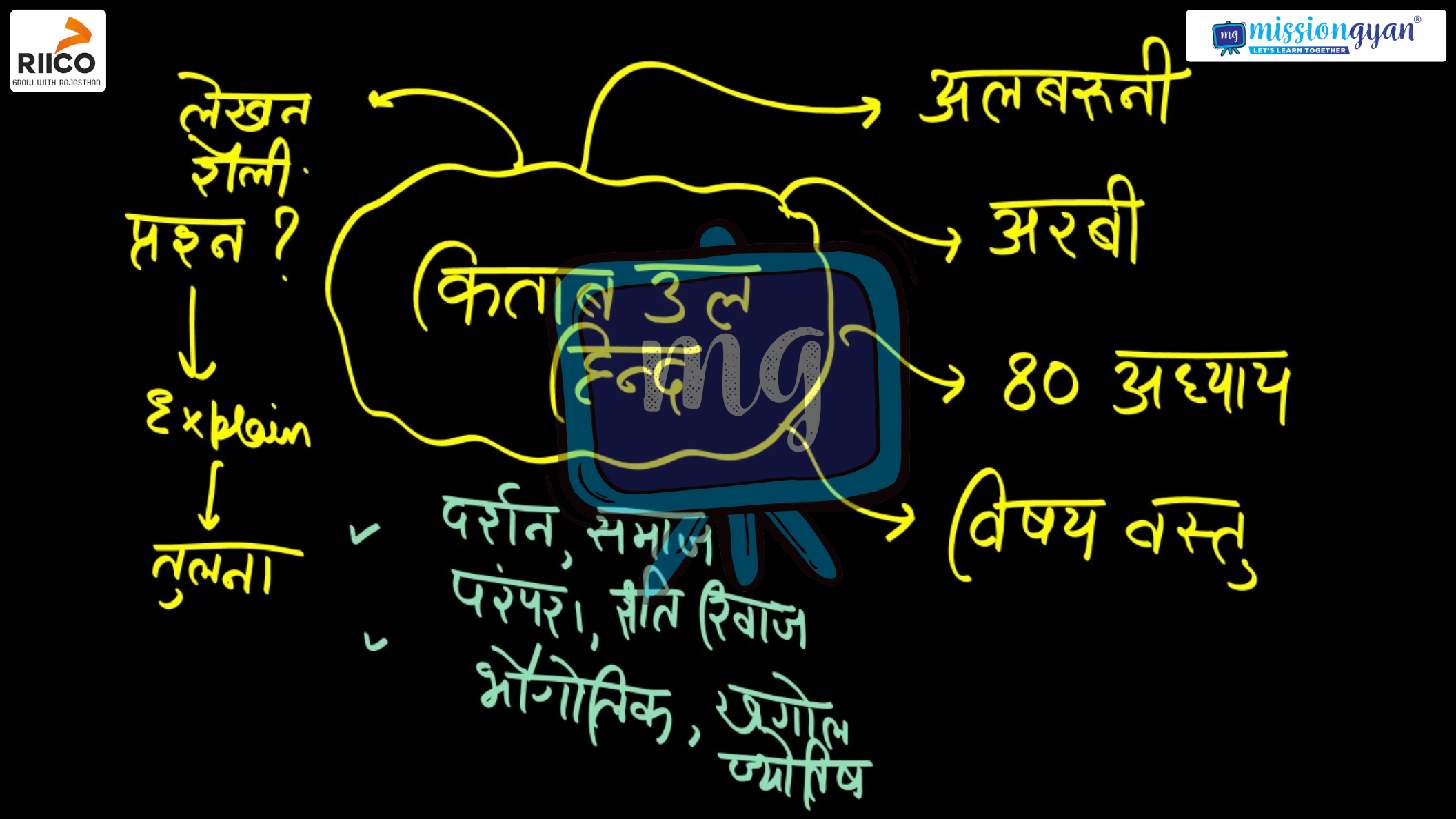

किताब-उल-हिन्द

- लेखक-अल-बिरुनी
  - अरबी भाषा में लिखा गया एक विस्तृत ग्रन्थ है।
  - भाषा-सरल व स्पष्ट
  - 80 अध्याय में विभाजित
  - विषय :- धर्म व दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान, रीति-रिवाजो, प्रथाओं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लेखन की विशिष्ट शैली–

- लेखन शैली: प्रश्न → संस्कृत परम्परा → अन्य संस्कृतियों से तुलना।
- संस्कृत, पाली व प्राकृत ग्रंथों से परिचित था।
- वह भाषाओं व अनुवाद में दक्ष था।
- उसने संस्कृत ग्रंथों का अरबी और यूक्लिड के कार्यों का संस्कृत में अनुवाद किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

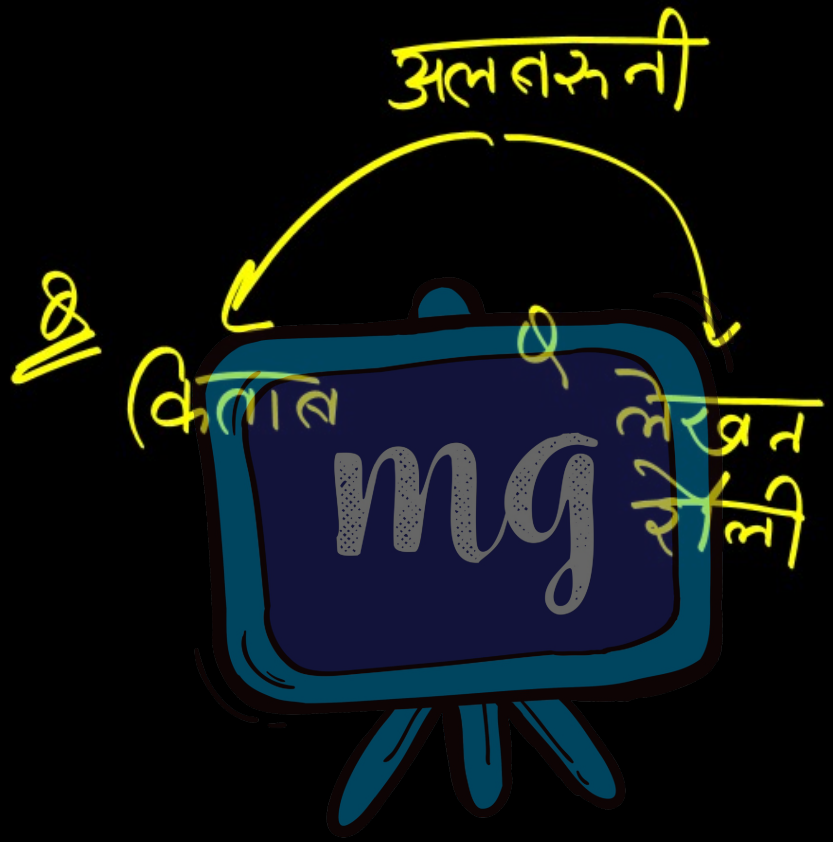

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

"अल-बिरुनी तथा संस्कृतवादी परम्परा

- विदेशी यात्रियों ने उपमहाद्वीप में जो भी देखा, सामान्तः उसकी तुलना उन्होंने उन प्रथाओं से की जिनसे वे परिचित थे।
- अल-बिरुनी अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में निहित समस्याओं से परिचित था जो उसके अनुसार समझ में बाधक तत्व थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

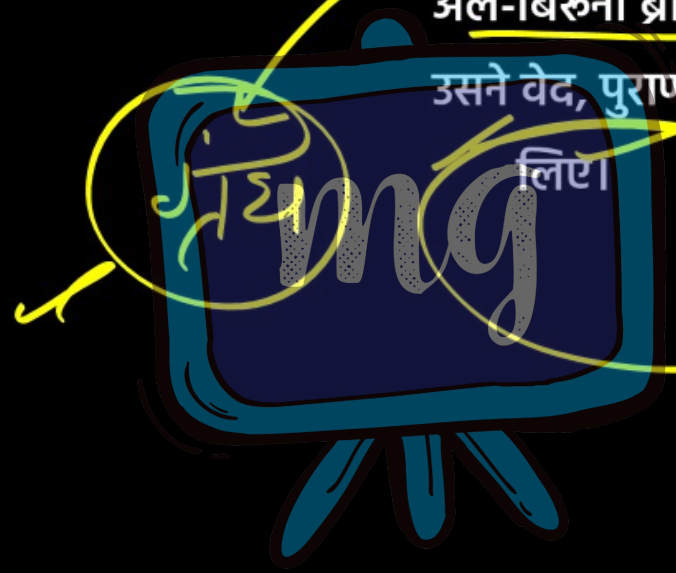

तीन अवरोध: भाषा, धार्मिक भिन्नता और अभिमान।

अल-बिरुनी ब्राह्मण ग्रंथों पर काफी निर्भर था।

उसने वेद, पुराण, भगवद्गीता, पतंजलि व मनुस्मृति से उद्धरण लिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अल-बिरुनी का जाति व्यवस्था का विवरण

- अन्य समुदायों में प्रतिरूपों की खोज के माध्यम से जाति व्यवस्था को समझने व व्याख्या करने का प्रयास किया।
- उसके अनुसार प्राचीन फारस में चार सामाजिक वर्गों को मान्यता थी
  - घुड़सवार और शासक वर्ग
  - भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक
  - खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक तथा
  - कृषक तथा शिल्पकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उसने यह दिखाने का प्रयास किया कि सामाजिक वर्ग केवल भारत तक ही सीमित नहीं थे।
- उसने यह भी दिखाने का प्रयास भी किया कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था उनमें भिन्नता केवल धार्मिकता के पालन में थी।
- जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को माना, परन्तु

- अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार किया-"हर वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।"
- वह जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा को प्रकृति के नियमों के विरुद्ध मानता था

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वर्ण व्यवस्था

❖ अल-बिरुनी ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है–

1. ब्राह्मण = अल बिरुनी के अनुसार ब्रह्मण सर्वोच्च वर्ण था।
= उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से
= मुख का स्थान सबसे उच्च माना गया है।
= इसी कारण हिन्दु जाति में सबसे उच्च स्थान दिया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. क्षत्रिय = क्षत्रियों की उत्पत्ति आदिदेव ब्रह्मा के कन्धों व हाथों से।

= मुख के बाद द्वितीय स्थान कन्धों व बाहों का है।

= वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों के बाद द्वितीय स्थान पर रखा गया है।

3. वैश्य = वैश्य वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के उदर व जंघा से मानी जाती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

4. शूद्र = शूद्र वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के चरणों से मानी गई है।

= वर्ण व्यवस्था में अंतिम चतुर्थ स्थान दिया गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अल-बिरुनी वैश्य व शूद्रों में अधिक अंतर नहीं मानता था।
- वर्ग भेद के बावजूद लोग साथ रहते थे।
- जाति व्यवस्था का उसका वर्णन संस्कृत ग्रंथों से प्रभावित था।
- इन ग्रंथों में जाति नियम ब्राह्मण दृष्टिकोण से बताए गए थे।
- वास्तविक जीवन में जाति व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी।
- अंत्यज वर्ग सस्ता श्रम उपलब्ध कराता था।
- इस वर्ग का आर्थिक व्यवस्था में भी स्थान था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

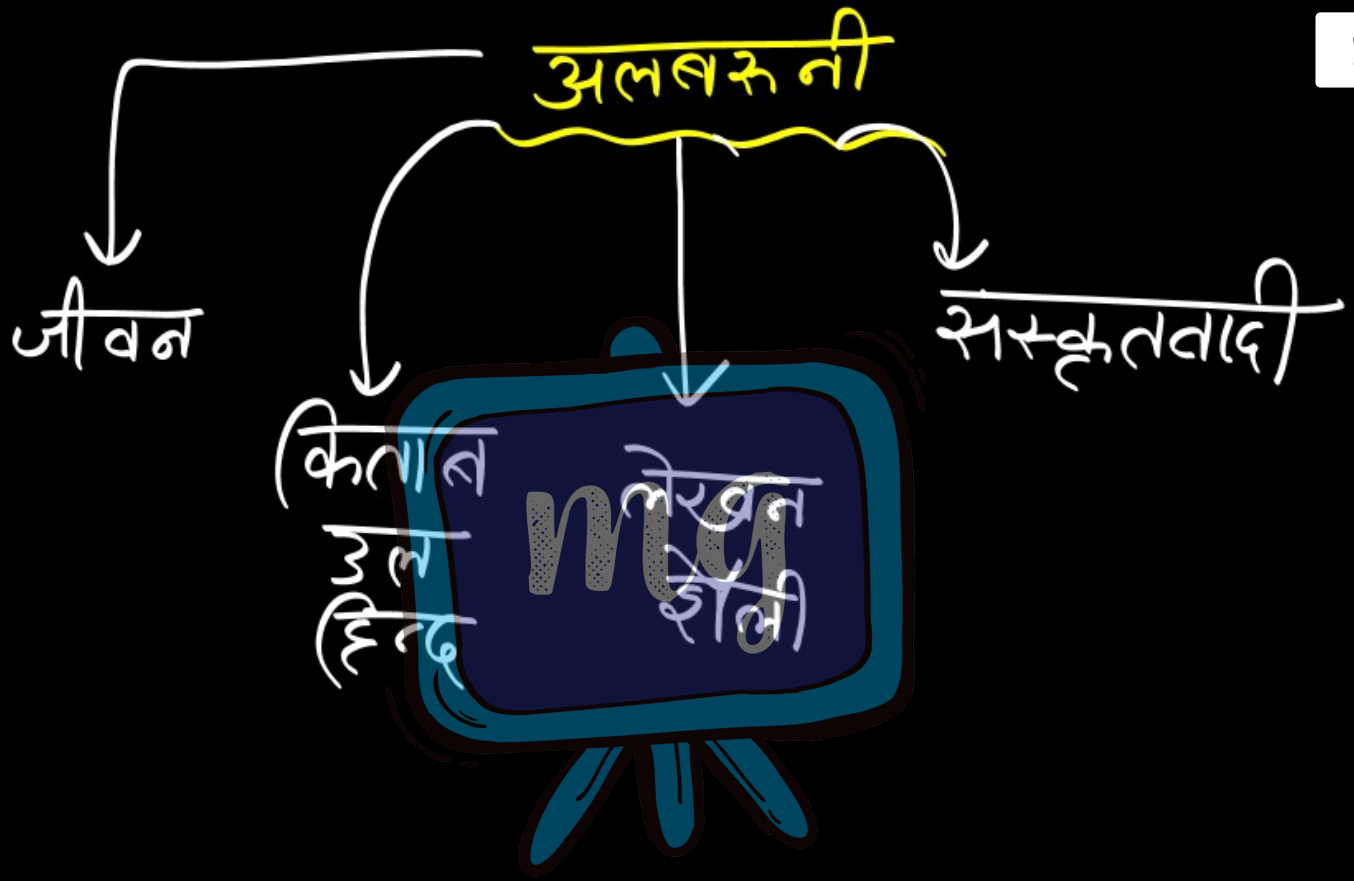

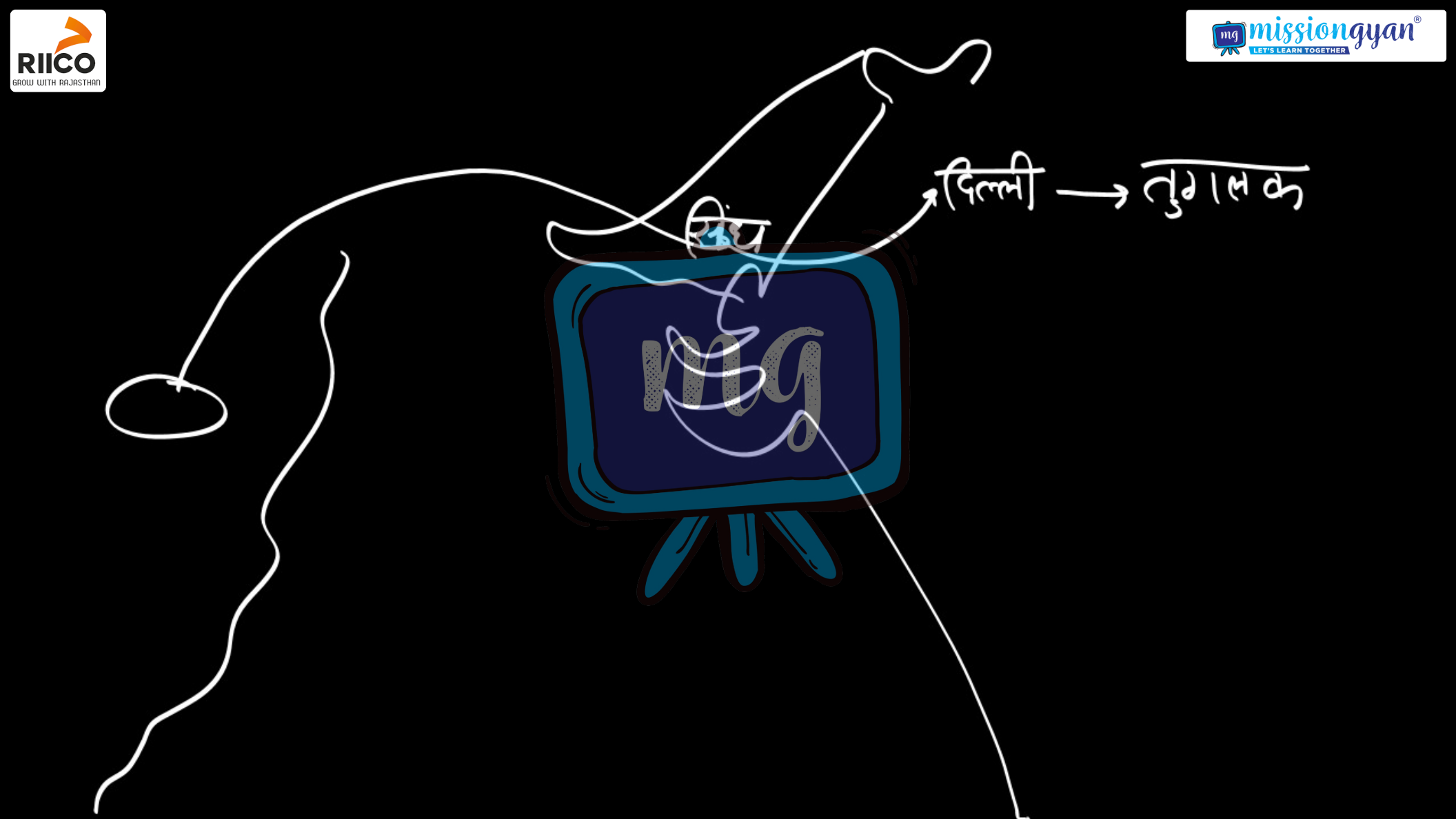
दिल्ली → तुगलक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता का रिह्ला

- इब्न बतूता 14वीं शताब्दी में मोरक्को से भारत आया।
- वह मुहम्मद बिन तुगलक के समय दिल्ली पहुँचा।
- उसका अरबी यात्रा-वृत्तांत रिह्ला कहलाता है।
- रिह्ला में भारतीय समाज व संस्कृति का वर्णन है।
- वह शिक्षित परिवार से था और कम उम्र में अच्छी शिक्षा मिली।
- उसे यात्राओं से ज्ञान प्राप्त करना अधिक महत्वपूर्ण लगता था।
- सुल्तान ने उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया।
- गलतफहमी में जेल गया, बाद में पुनः काजी बना।
- 1342 में उसे दूत बनाकर भेजा गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भारत से पहले वह मक्का, सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान व अफ्रीका घूम चुका था।
- 1333 में सिंध होते हुए भारत पहुँचा।
- उसने मालाबार, मालदीव, बंगाल, असम, सुमात्रा और चीन की यात्रा की।
- 1347 में चीन से लौटा।
- उसके वर्णन की तुलना मार्को पोलो से की जाती है।
- उसने विभिन्न संस्कृतियों, लोगों और मान्यताओं का वर्णन किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उस समय यात्राएँ कठिन और जोखिमपूर्ण थीं।
- मुल्तान–दिल्ली 40 दिन, सिंध–दिल्ली 50 दिन, दौलताबाद–दिल्ली 40 दिन लगते थे।
- ग्वालियर–दिल्ली यात्रा लगभग 10 दिन की थी।
- मुल्तान से दिल्ली जाते समय उसके कारवाँ पर हमला हुआ।
- मोरक्को लौटने पर उसकी यात्राएँ लिखवाई गईं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शिक्षा तथा मनोरंजनः-

- इब्न बतूता के संस्मरण लिखने के लिए इब्न जुजाई को नियुक्त किया गया।
- इब्न जुजाई ने उसकी यात्राओं, शहरों और घटनाओं को लेखबद्ध किया।
- 1400–1800 के बीच कई यात्रियों ने फारसी में भारत के यात्रा-वृत्तांत लिखे।
- अब्दुल रज्जाक समरकंदी से विजयनगर साम्राज्य की जानकारी मिलती है।
- 1620 में महमूद वली बल्खी भारत आया।
- 1740 में शेख अली हाजिन ने उत्तर भारत की यात्रा की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा

- चौदहवीं शताब्दी में इब्न बतूता भारत आया तब तक पूरा उपमहाद्वीप वैश्विक संचार तंत्र का हिस्सा बन चुका था।
- इब्न बतूता ने स्वयं क्षेत्रों की यात्राएँ की।
- पवित्र पूजा स्थलों को देखा, कई बार काजी पद पर रहा।
- शहरी केन्द्रों की विश्ववादी संस्कृति का उपयोग, किया, जहाँ अरबी, फारसी, तुर्की व अन्य भाषाएँ बोलने वाले लोग विचारों, सूचनाओं तथा उपाख्यानों का आदान-प्रदान करते थे।

- लेखकों ने जो भी कुछ अपरिचित था उसे विशेष रूप से रेखांकित किया एवं लिखा।
- ऐसा लेखन श्रोता अथवा पाठक को सुदूर एवं सुगम्य देशों के वृत्तांतों से पूरी तरह प्रभावित करने हेतु लिखा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता और भारतीय शहरः–

- इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप के शहरों को उन लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया जिनके पास इच्छा, साधन व कौशल था।
- ये शहर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे।
- युद्धों, आदि से यह शहर प्रभावित होते थे।
- अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें, चमक-दमक वाले रंगीन बाज़ार जो विविध वस्तुओं से भरे थे।
- इब्न बतूता दिल्ली को भारत में सबसे बड़ा शहर बताता है जिसकी आबादी विशाल थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महाराष्ट्र का दौलताबाद भी आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।
- बाजार आर्थिक विनिमय के स्थान ही नहीं थे बल्कि सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे।
- अधिकांश बाजारों में एक मन्दिर व मस्जिद भी होते थे।
- इब्न बतूता भारतीय कृषि को अधिक उत्पादनकारी मानता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कारण:-

- ❑ मिट्टी का उपजाऊपन
- ❑ किसानों द्वारा वर्ष में 2 फसलें
- ❖ उपमहाद्वीप का व्यापार एशियाई तंत्र में भली भाँति जुड़ा था।
- ❖ भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया, दोनों में बहुत माँग थी। जिससे शिल्पकारों तथा व्यापारियों को भारी मुनाफ़ा होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- **निर्यात:–** भारतीय कपड़ों विशेष रूप से सूती कपड़ा, महीन मलमल, रेशम, जरी, साटन।
- महीन रेशम की कुछ किस्में बहुत महँगी होती थी जिसे अमीर वर्ग ही पहन सकता था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

देहली का वर्णन–

- तत्कालीन ग्रंथों में दिल्ली को देहली नाम से उद्धत किया गया।
- दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी आबादी वाला शहर था।
- शहर के चारों ओर बनी प्राचीन अतुलनीय थी।
- दीवार की चौड़ाई ग्यारह (11) हाथ (1 हाथ = 20 इंच लगभग) (17.6 फीट)
- दीवार में रात्रि के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष थे।
- प्राचीरों के अन्दर भण्डारगृह थे जिनमें खाद्य सामग्री, हथियार, बारुद आदि सामग्री के भण्डार थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

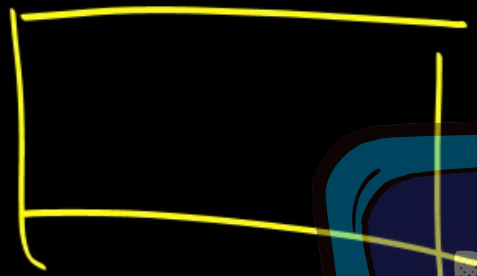

- प्राचीर के भीतर सैनिक व घुड़सवार आया जाया करते थे।
- प्राचीर में खिड़कियां थी जो शहर की ओर खुलती थी व उनसे प्रकाश अन्दर आता था।
- प्राचीन का निचला भाग पत्थर व ऊपर का ईटों से बना था।
- इसमें कई मीनारें बनीं थी।
- 28 द्वार थे जिन्हें दरवाजा कहते थे।
- बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल था।
- माण्डवी दरवाजे में अनाज मण्डी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

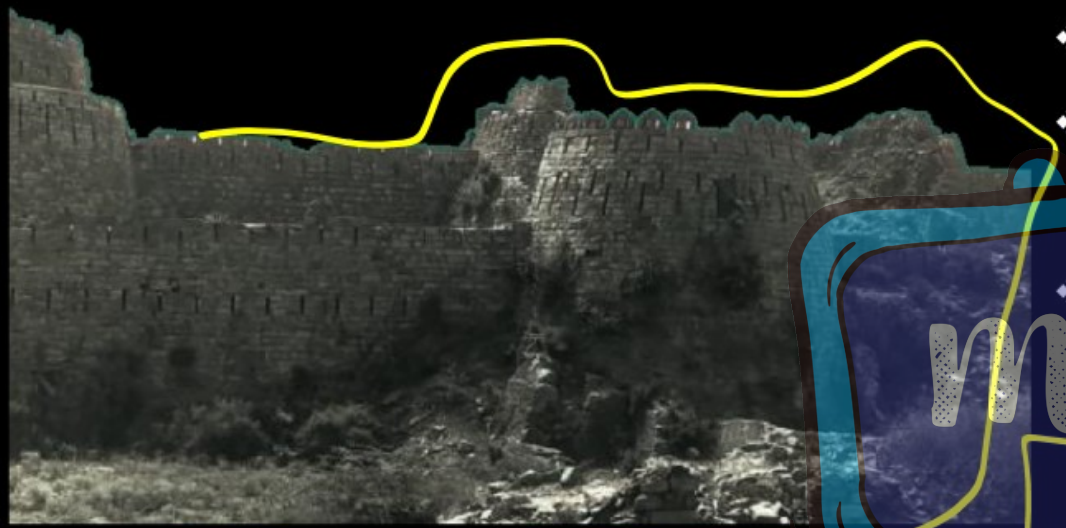

- गुल दरवाजे में फलों का बगीचा।
- शहर में एक बेहतरीन कब्रगाह जिसमें कई कब्रों पर गुम्बद बने जहां गुम्बद नहीं है वहाँ मेहराब है।
- कब्रगाह में कंदाकार में चमेली या जंगली गुलाब उगाये जाते थे जहाँ सभी मौसम में फूल खिले रहते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संचार की एक अनूठी व्यवस्था – इब्न बतूता के अनुसार

- इब्न बतूता डाक प्रणाली की कार्यकुशलता से विशेष प्रभावित थे।
- व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य विशेष प्रयास करता था।
- लगभग सभी मार्गों पर सराय व विश्राम गृह बने हुए थे।
- इस व्यवस्था से व्यापारियों को सूचना भेजना, उधार प्रेषित करना व अल्प सूचना पर माल भेजना सुविधाजनक हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संचार

पैदल

=

तेज

घोड़े

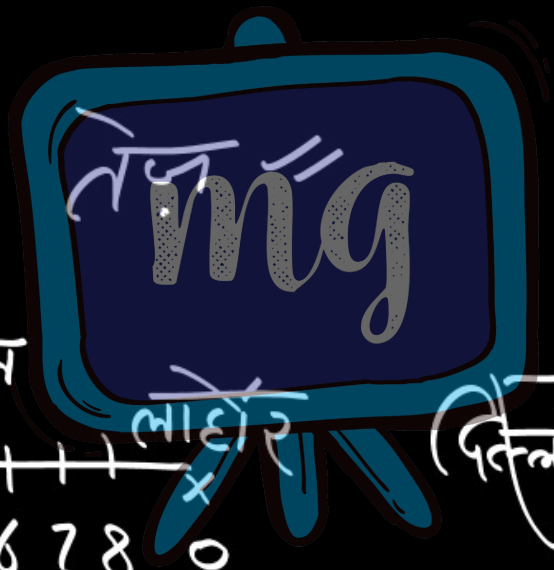

दिल्ली 30 दिन लाहौर

0 1 2 3 4 5 6 7 8

5 दिन

दिल्ली लाहौर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सिंध से दिल्ली की यात्रा में 50 दिन लगते थे जबकि सुल्तान को सूचना इस डाक व्यवस्था से 5 दिन में ही मिल जाती थी।

डाक व्यवस्था – घोड़े पर और पैदल:–

- इब्न बतूता ने डाक व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है–

1. **अश्व डाक व्यवस्था :-**

- इसको 'उलुक' नाम दिया गया।
- प्रत्येक चार मील पर स्थापित
- राजकीय घोड़ों द्वारा चालित

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. पैदल डाक व्यवस्था:–

- इसमें प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं। इसे "दाबा" कहा जाता है और यह एक मील का एक तिहाई होता है।
- प्रत्येक तीन मील पर एक घनी आबादी का गाँव, जिसके तीन मण्डप होते थे। जिसमें लोग कार्य प्रारम्भ के लिए तैयार रहते थे।
- प्रत्येक के हाथ में दो हाथ लम्बी छड़ी होती थी जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सन्देशवाहक जब यात्रा प्रारम्भ करता था तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों वाली छड़ी लिए अपनी क्षमतानुसार दौड़ता था।
- मंडप के लोग घंटियों की आवाज से सतर्क हो जाते व सन्देशवाहक से पत्र ले लगले दावा तक दौड़ लगाता और यही क्रम चलता रहता था।
- इब्न बतूता ने पैदल डाक व्यवस्था को अश्व डाक व्यवस्था से तीव्र बताया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

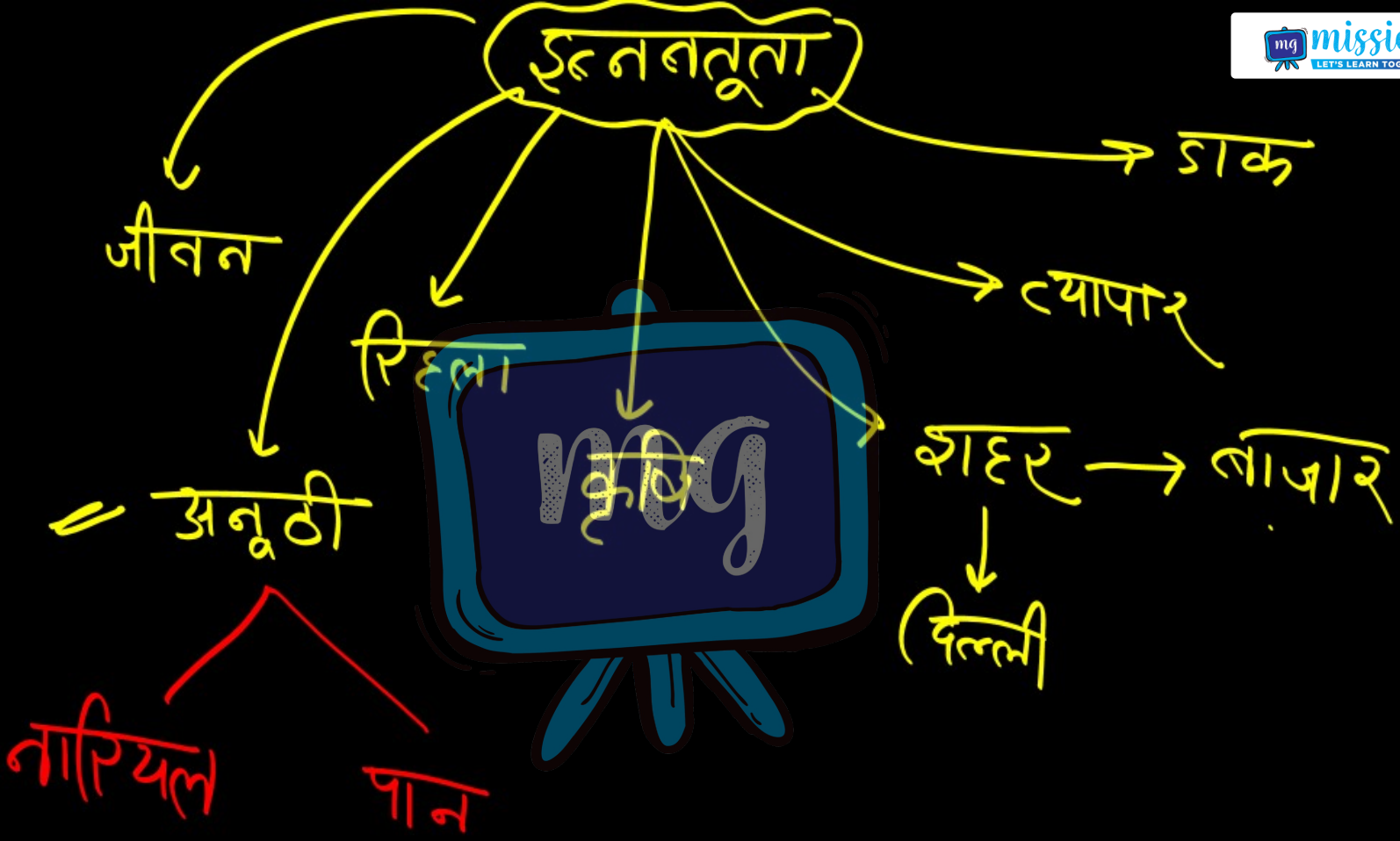

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1498

यूरोपीय यात्री

- लगभग 1500 ई. में पुर्तगालियों का भारत में आगमन हुआ (1498 ई. में वास्को डी गामा कालीकट पहुंचा)
- इन यात्रियों में से कई लोगों ने भारतीय रीति-रिवाजों तथा धार्मिक प्रथाओं के विषय में विस्तृत वृत्तान्त लिखें।
- जेसुइट रॉबर्टो नोविली ने तो भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लगभग 1500 ई. में पुर्तगालियों का भारत में आगमन हुआ (1498 ई. में वास्को डी गामा कालीकट पहुंचा)
- इन यात्रियों में से कई लोगों ने भारतीय रीति-रिवाजों तथा धार्मिक प्रथाओं के विषय में विस्तृत वृत्तान्त लिखें।
- जेसुइट रॉबर्टो नोविली ने तो भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी किया।
- सबसे प्रसिद्ध यूरोपीय लेखकों में दुआर्ते बरबोसा का नाम है जिन्होंने दक्षिण भारत में व्यापार व समाज का वर्णन किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 1600 ई. के बाद बड़ी संख्या में डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी यात्री भारत आये।
- फ्रांसीसी जौहरी ज्यों-बैप्टिस्ट तैवर्नियर ने कम से कम 6 बार भारत की यात्रा की। वह भारत की व्यापारिक स्थिति से बहुत प्रभावित था तथा उसने भारत की तुलना ईरान व ऑटोमन साम्राज्य से की है।
- इटालवी चिकित्सक मनूकी यूरोप वापस नहीं गये व भारत में ही बस गये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

फ्रांस्वा बर्नियर

- फ्रांस्वा बर्नियर फ्रांसीसी चिकित्सक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ व इतिहासकार था।
- वह अवसरों की तलाश में भारत आया।
- 1656–1668 तक मुगल दरबार से जुड़ा रहा।
- उसने दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया।
- बाद में दानिशमंद खान से जुड़ा।
- पुस्तक: ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बर्नियर ने मुगल सेना के साथ यात्राएँ कीं और कश्मीर का वर्णन किया।
- अपनी कृति लुई चौदह को समर्पित की।
- 1670–71 में फ्रांस में प्रकाशित हुई।
- शीघ्र ही अंग्रेजी, डच, जर्मन व इतालवी में अनुवाद हुआ।
- 1670–1725 के बीच 8 बार पुनर्मुद्रित हुई।

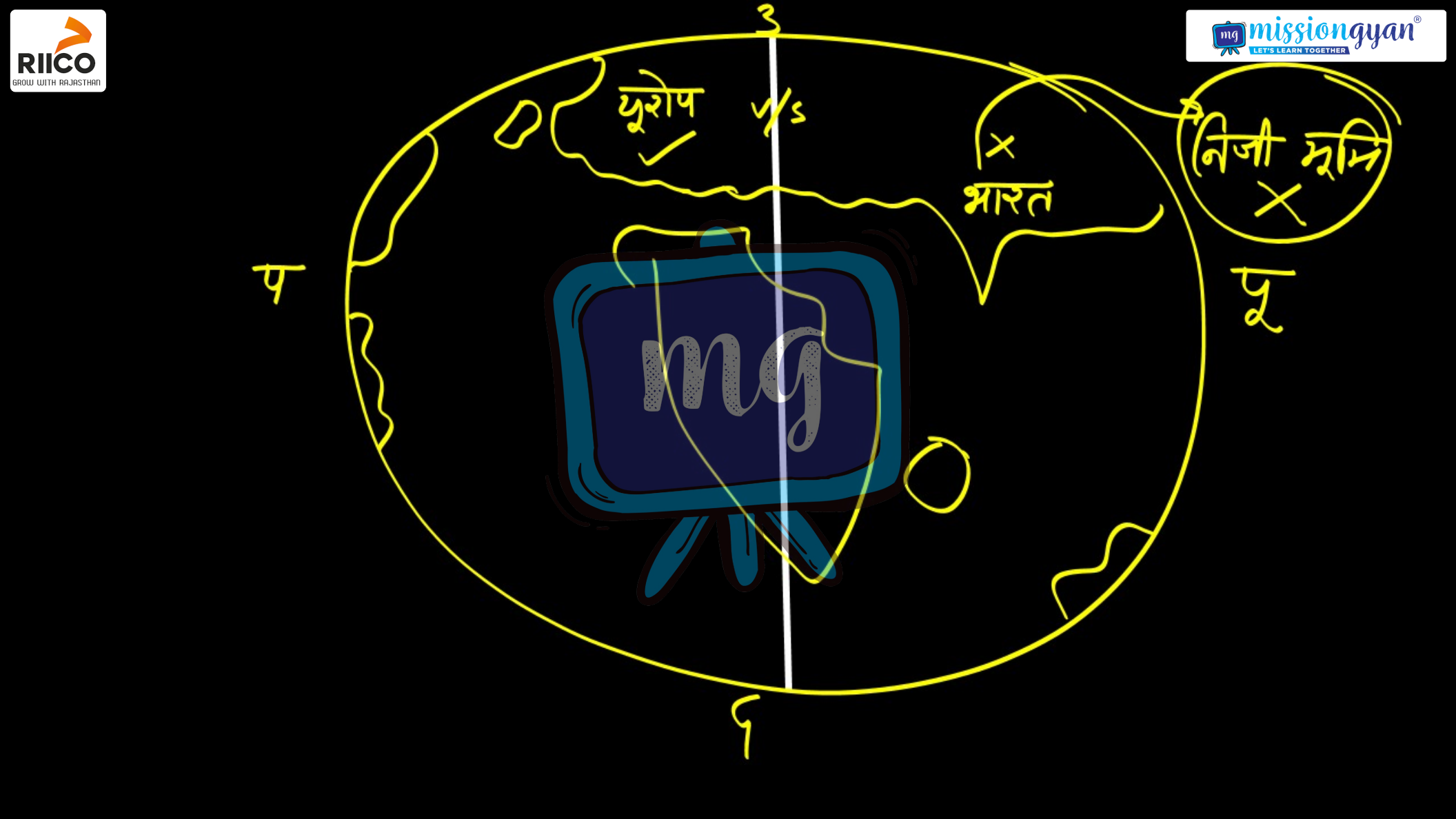
उ
यूरोप
प/स
भारत
निजी भूमि
प
पू
द

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इ० फ०

बर्नियर तथा अपविकसित पूर्व:-

- बर्नियर की पुस्तक/यात्रा वृत्तान्त : "ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर"
- बर्नियर व इब्न बतूता के वर्णन में मूलभूत अन्तर है।
- इब्न बतूता ने अपने वर्णन में हर उस चीज को शामिल किया है जो अनुठेपन के कारण उसे प्रभावित करती है।
- बर्नियर ने भारत में जो देखा उसकी तुलना यूरोप से तथा विशेष रुप से फ्रांस से करता था तथा भिन्नता को उजागर करने में अधिक रुचि रखता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

फ्रांस्वा बर्नियर

- उसका विचार नीति-निर्माताओं तथा बुद्धिजीवियों को प्रभावित करने का था जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ऐसे निर्णय ले जिन्हें वह "सही" मानता था।
- बर्नियर द्वारा लिखित ग्रन्थ "ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर" अपने गहन प्रेक्षण, आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि तथा गहन चिन्तन के लिए उल्लेखनीय है।
- पुस्तक में निरन्तर मुगलकालीन भारत की तुलना यूरोप से की जाती रही है।
- तथा यूरोप को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बर्नियर के वर्णन में भारत को यूरोप के "प्रतिलोम" के रूप में दिखाया गया है या फिर यूरोप का 'विपरीत' जैसा।
- उसका सम्पूर्ण वर्णन इस प्रकार का है कि पश्चिमी दुनिया को भारत निम्न कोटि का प्रतीत होता है।

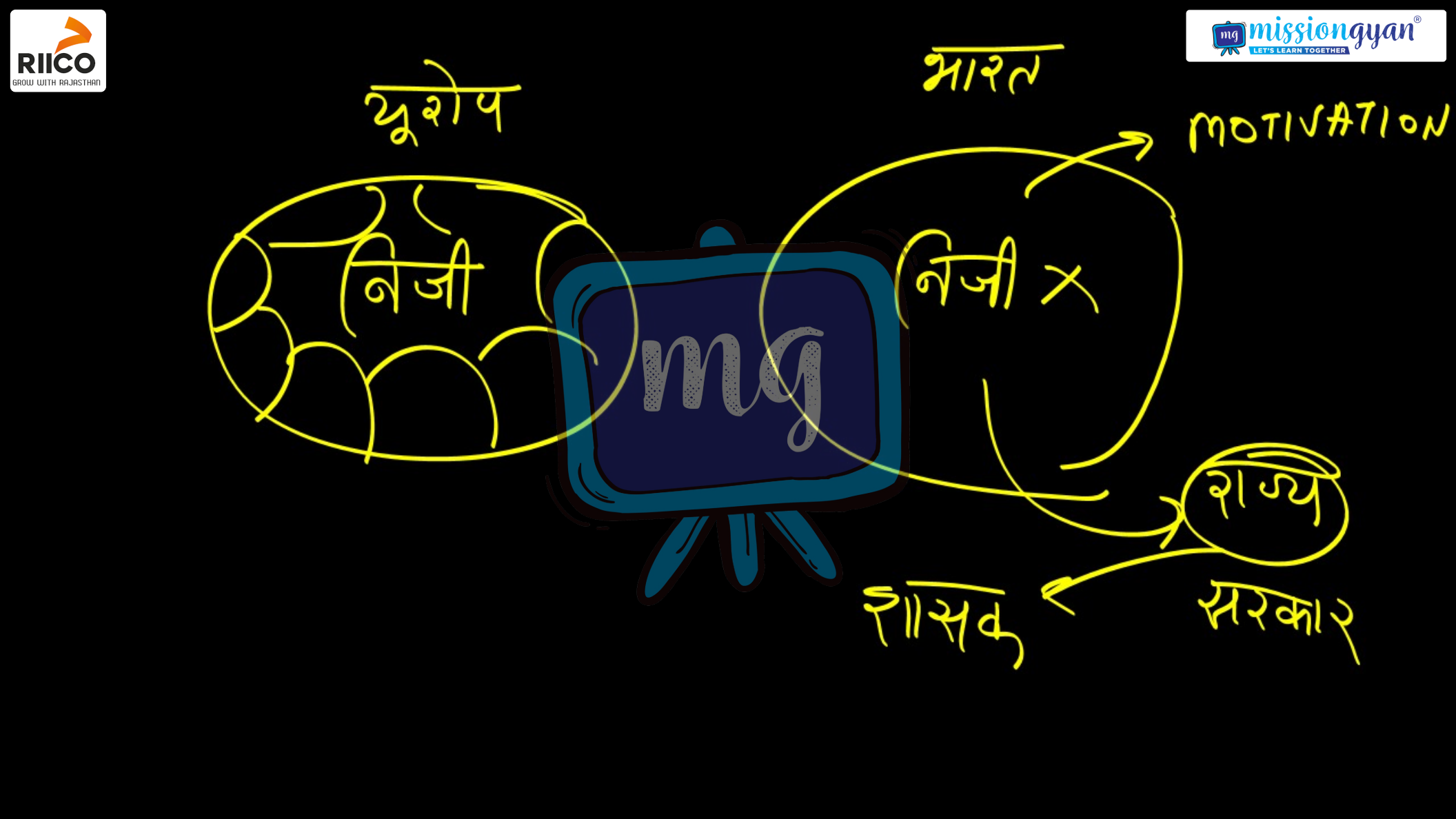
यूरोप
भारत
MOTIVATION
निजी
निजी ×
राज्य
शासक
सरकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूमि स्वामित्व का प्रश्न :-

- बर्नियर के अनुसार भारत व यूरोप के बीच मूल भिन्नताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था।
- उसका निजी स्वामित्व के गुणों में दृढ़ विश्वास था।
- वह भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य व निवासियों दोनों के लिए हानिकारक मानता था।
- उसके अनुसार मुगल साम्राज्य में सम्राट सारी भूमि का स्वामी था जिसे वह अमीरों को बांटता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इससे अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अनर्थकारी परिणाम होते थे।
- बर्नियर के अनुसार राजकीय भू-स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे।
- इसी कारण उत्पादन स्तर को बनाये रखने व बढ़ोत्तरी के प्रति उदासीन रहते थे।
- भूमि के रख-रखाव व बेहतरी का प्रयास नहीं हो पाया।
- इस प्रकार निजी भूस्वामित्व के अभाव ने बेहतर भूधारकों के वर्ग के उदय को रोका जो भूमि के रखरखाव व बेहतरी के प्रति सजग रहते।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसी के चलते कृषि का समान रूप से विनाश होता गया।
- किसानों का असीम उत्पीड़न ।
- समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में लगातार पतन की स्थिति उत्पन्न हुई सिवाय शासक वर्ग के।
- इसी के वर्णन में बर्नियर भारतीय समाज को दरिद्र लोगों के समरूप जनसमूह के रूप में वर्णित करता है।
- बर्नियर का विश्वास था कि भारत में बहुत अमीर व गरीबों (दरिद्रों) के मध्य की स्थिति के लोग नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर मुगल साम्राज्य के बारे में लिखता है कि–

- इनका राजा "भिखारियों व क्रूर लोगों" का राजा था।
- इनके शहर विनष्ट तथा खराब हवा से दूषित थे।
- खेत "झाड़ीदार" व "घातक दलदल" से भरे थे।
- इन सभी का एक मात्र कारण "राजकीय स्वामित्व" था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग़रीब किसान



यहाँ बर्नियर द्वारा ग्रामीण अंचल में कृषकों के विषय में दिए गए विवरण से एक उद्धरण दिया जा रहा है:

हिंदुस्तान के साम्राज्य के विशाल ग्रामीण अंचलों में से कई केवल रेतीली भूमियाँ या बंजर पर्वत ही हैं। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है और इन इलाकों की आबादी भी कम है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यहाँ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन रह जाता है इनमें से कई श्रमिक गवर्नरों द्वारा किए गए बुरे व्यवहार के फलस्वरुप मर जाते हैं। गरीब लोग जब अपने लोभी स्वामियों की माँगों को पूरा करने में असमर्थ हो जाते हैं तो उन्हें न केवल जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता है, बल्कि उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता है, जिन्हें दास बना कर ले जाया जाता है।

इस प्रकार ऐसा होता है कि इस अत्यंत निरंकुशता से हताश हो किसान गाँव छोड़कर चले जाते हैं।

इस उद्धरण में बर्नियर राज्य और समाज से संबंधित यूरोप में प्रचलित तत्कालीन विवादों में भाग ले रहा था, और उसका प्रयास था कि मुग़ल कालीन भारत से संबंधित उसका विवरण यूरोप में उन लोगों के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा जो निजी स्वामित्व की "अच्छाइयों" को स्वीकार नहीं करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- एक भी मुगल दस्तावेज यह सूचित नहीं करता कि राज्य ही भूमि का मात्र स्वामी था।
- 16वीं शताब्दी में अकबर का सरकारी इतिहाकार अबुल फजल भूमि राजस्व को "राजत्व का पारिश्रमिक" बताता है।
- यह राजा द्वारा अपनी प्रजा को सुरक्षा प्रदान करने के बदले की मांग लगती है, न कि "भूमि पर लगान"।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यूरोप के लिए एक चेतावनी

बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुग़ल ढाँचे का अनुसरण किया तो :

उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो।

वे जल्द ही रेगिस्तान तथा निर्जन स्थानों के, भिखारियों तथा क्रूर लोगों के राजा बनकर रह जाएँगे जैसे कि वे जिनके विषय में मैंने वर्णन किया है। (मुग़ल शासक) हम उन महान शहरों और नगरों को खराब हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे, तथा विनाश की स्थिति में, जिनके जीर्णोद्धार की किसी को चिंता नहीं है, व्यक्त टीले और झाड़ियों अथवा घातक दलदल से भरे हुए खेत, जैसा कि पहले ही बताया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर के विचारों का प्रभाव

- बर्नियर के विचारों से 18वीं शताब्दी में पश्चिमी विचारक भी प्रभावित हुए।
- फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने इसके वृत्तान्त का उपयोग "प्राच्य निरंकुशवाद" के सिद्धांत को विकसित करने में किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार एशिया में शासक अपनी प्रजा पर निर्बाध प्रभुत्व का उपयोग करते थे।
- इससे प्रजा गरीबी में तथा दास बनकर रहती थी।

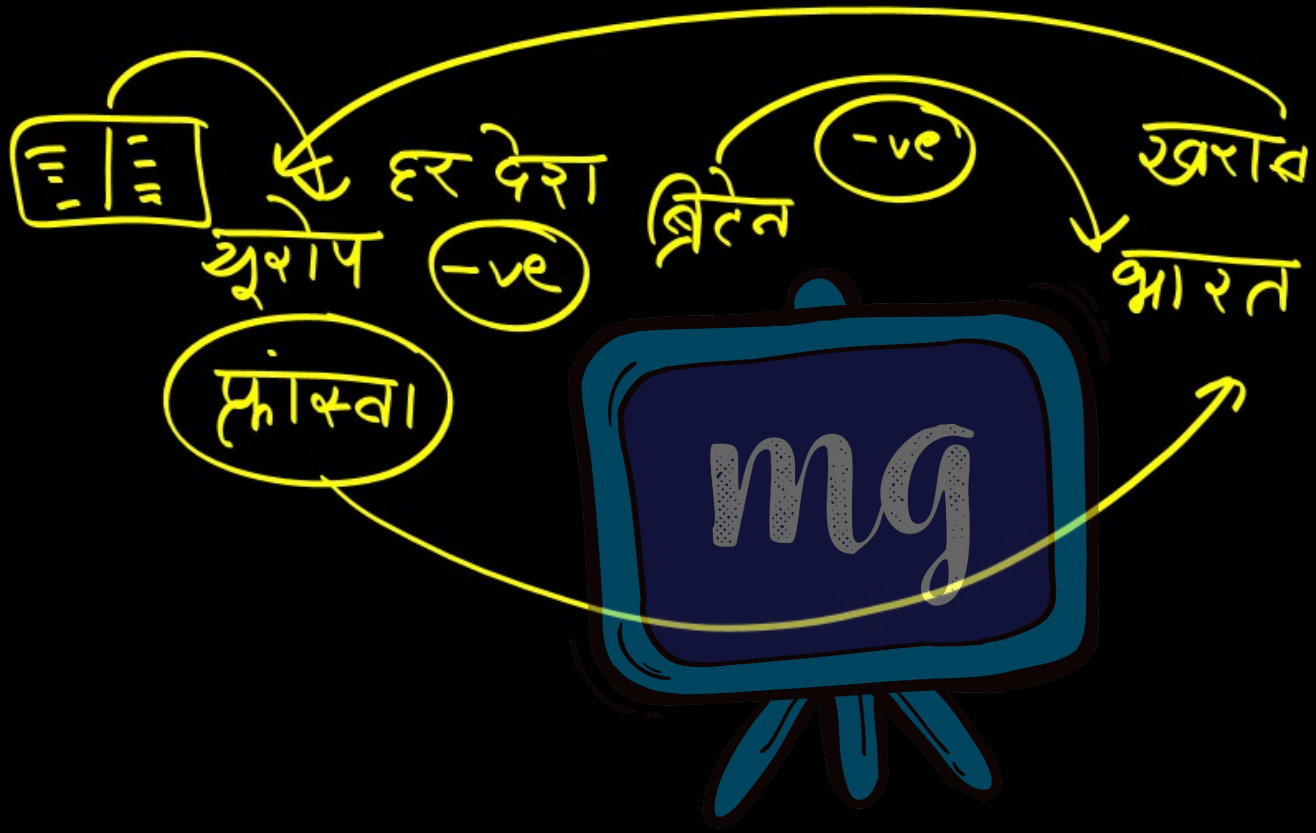
हर देश
यूरोप
-ve
फ्रांस
ब्रिटेन
-ve
खराब
भारत
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके अनुसार भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।
- निजी सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं थी।
- इस दृष्टिकोण से राजा और उसके अमीरों को छोड़कर अन्यों का जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो पाता था।
- 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने इन्हीं सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।
- नाम दिया "एशियाई उत्पादक शैली के सिद्धांत"।
- तर्क दिया कि भारत तथा अन्य एशियाई देशों में उपनिवेशवाद से पूर्व अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे–

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि:–

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था।
- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

व्यापार सम्बन्धित वर्णन में कहा है कि-

- व्यापारिक गतिविधियां सुदूर प्रदेशों तक फैली हुई थी।
- पूरे विश्व से बहुमूल्य धातुएं भारत आती थी। उत्पादों का निर्यात सोने-चांदी के बदले होता था।
- व्यापारिक समुदाय समृद्ध था।

नगरों का वर्णन-

- 17वीं शताब्दी में कुल जनसंख्या की लगभग 15 प्रतिशत आबादी नगरों में रहती थी।
- यह अनुपात पश्चिमी यूरोप के नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था।
- फिर भी बर्नियर मुगलकालीन शहरों को "शिविर-नगर" कहता है।
- ये शिविर नगर अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविर पर निर्भर रहते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

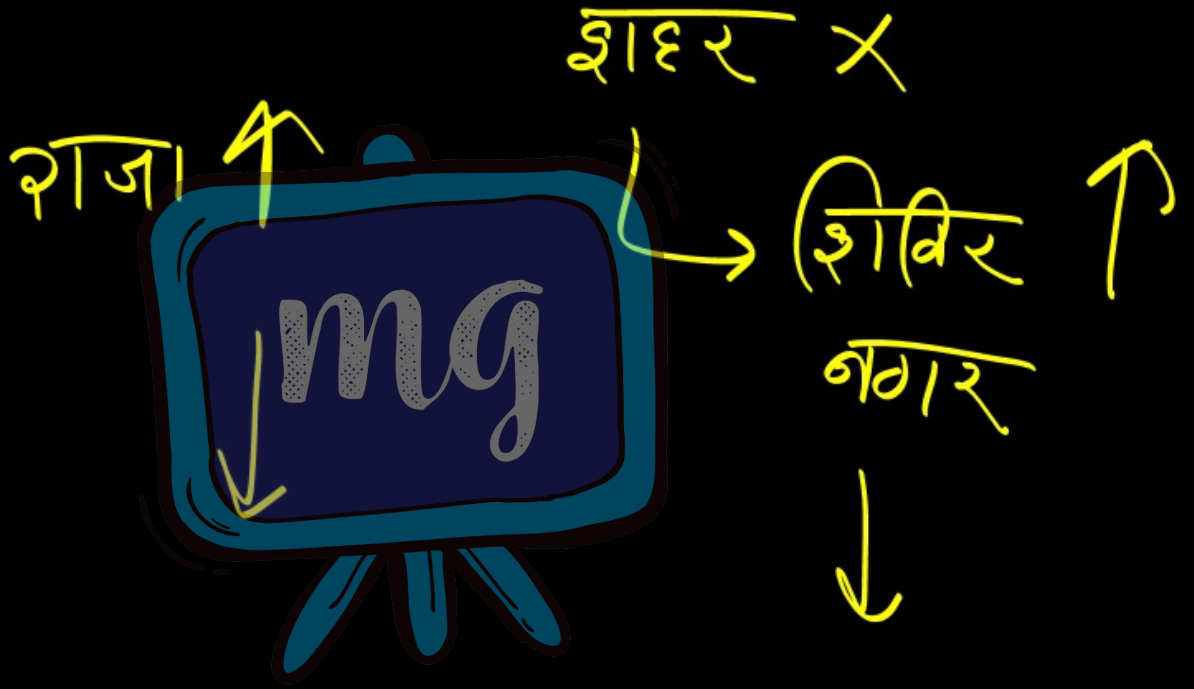

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे तथा उनके चले जाने के बाद तेजी से इनका पतन हो जाता था।

